IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

मध्यकालीन भारत में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का विश्लेषण

डॉ. माया सिंह

अतिथि विद्वान, इतिहास विभाग

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर नैकिन, जिला - सीधी, मध्य प्रदेश

सारांश –

प्रस्तुत शोध पत्र मध्यकालीन भारत में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का गहन विश्लेषण करने का प्रयास है। मध्यकाल (लगभग 700 ई. से 1700 ई.) भारतीय इतिहास का एक संक्रमणकालीन युग था जिसमें बाहरी आक्रमणों, धार्मिक परिवर्तनों एवं सामाजिक पुनर्गठन ने स्त्री–जीवन को गहराई से प्रभावित किया। वैदिक काल में स्त्री की अपेक्षाकृत स्वतंत्र एवं सम्मानित स्थिति धीरे–धीरे संकुचित होती गई और मध्यकाल तक आते–आते महिलाएं अनेक सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक बंधनों में जकड़ गईं। पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा, शिक्षा से वंचना तथा संपत्ति अधिकारों की अनुपस्थिति ने उनके जीवन को और भी कठिन बना दिया। तथापि इसी काल में भक्ति आंदोलन के माध्यम से कुछ महिलाएंकृ जैसे मीराबाई, अक्कमहादेवी एवं अन्यकृसामाजिक बाधाओं को तोड़कर अपनी अभिव्यक्ति स्थापित करने में सफल रहीं। यह शोध पत्र द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है तथा तत्कालीन ऐतिहासिक ग्रंथों, यात्रा–वृत्तान्तों एवं शिलालेखों का विश्लेषण करते हुए मध्यकालीन स्त्री–जीवन का बहुआयामी चित्र प्रस्तुत करता है।

e[; 'kCn %& मध्यकालीन भारत, महिला स्थिति, पर्दा प्रथा, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, भक्ति आंदोलन, स्त्री अधिकार, सांस्कृतिक इतिहास।

çLrkouk %&

मध्यकालीन भारत का इतिहास जटिल एवं बहुस्तरीय है। इस काल में भारतीय उपमहाद्वीप में अनेक राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन हुए। इस्लामी आक्रमणों के साथ आई नई सामाजिक व्यवस्था, हिंदू धर्मशास्त्रों की कठोर होती व्याख्याएं तथा जातिव्यवस्था की जटिलताओं ने महिलाओं की स्थिति को विशेष रूप से प्रभावित किया। जहाँ प्राचीन वैदिक काल में गार्गी, मैत्रेयी जैसी विदुषी महिलाओं का उल्लेख मिलता है, वहीं मध्यकाल में महिलाओं का सार्वजनिक जीवन से बहिष्कार और घर की चहारदीवारी तक सीमित होना एक सामान्य सामाजिक वास्तविकता बन गई।

मध्यकाल को सामान्यतः तीन चरणों में विभाजित किया जाता है कृ प्रारम्भिक मध्यकाल (700–1200 ई.), सल्तनत काल (1206–1526 ई.) एवं मुगल काल (1526–1707 ई.)। इन तीनों चरणों में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन के भिन्न–भिन्न स्वरूप देखने को मिलते हैं। यद्यपि समग्र रूप से महिलाओं की स्थिति में पतन परिलक्षित होता है, तथापि क्षेत्रीय, धार्मिक एवं जातीय विभिन्नताओं के आधार पर यह स्थिति एकसमान नहीं थी। इतिहासकार अलबरूनी, इब्न बतूता, मार्को पोलो तथा अन्य यात्रियों के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

विवरण भारतीय महिलाओं की तत्कालीन स्थिति को समझने में सहायक हैं। इसके साथ ही मनुस्मृति, धर्मशास्त्र ग्रंथ, राजतरंगिणी, अर्थशास्त्र जैसे भारतीय ग्रंथ भी महिलाओं की सामाजिक–कानूनी स्थिति पर प्रकाश डालते हैं।

vè;;u dk mís';

प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैंकृ

1. मध्यकालीन भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करना।
2. इस काल में महिलाओं की आर्थिक स्थिति एवं उनकी आजीविका के स्रोतों का अध्ययन करना।
3. मध्यकालीन भारत में महिलाओं की सांस्कृतिक भागीदारी एवं अभिव्यक्ति के स्वरूप को समझना।
4. पर्दा प्रथा एवं अन्य सामाजिक प्रतिबंधों के स्वरूप एवं कारणों का परीक्षण करना।
5. भक्ति आंदोलन का महिला स्थिति पर पड़े प्रभाव का मूल्यांकन करना।
6. विभिन्न धार्मिक एवं जातीय समुदायों में महिला स्थिति की तुलनात्मक समीक्षा करना।

'kks/k i)fr %&

प्रस्तुत शोध पत्र पूर्णतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें उपयोग किया गया समस्त डेटा द्वितीयक स्रोतों से संकलित किया गया है। इन स्रोतों में सम्मिलित हैं –

1. ऐतिहासिक ग्रंथ एवं क्रोनिकल, तबकात–ए–नासिरी, तारीख–ए–फ़िरोजशाही, आइन–ए–अकबरी, अकबरनामा, हुमायूँनामा आदि;
2. विदेशी यात्रियों के यात्रा–वृत्तान्त, अलबरूनी, इब्न बतूता, मार्को पोलो, निकोलो कोंटी, बर्नियर, थेवेनोट आदि;
3. धर्मशास्त्र एवं साहित्यिक ग्रंथ, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, विज्ञानेश्वर की मिताक्षरा, संत कवियों की रचनाएं;
4. आधुनिक इतिहासकारों के शोध ग्रंथ एवं शोध पत्रिकाएं।
5. डेटा के विश्लेषण में ऐतिहासिक–तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है जिससे विभिन्न कालखंडों एवं क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति का सटीक आकलन किया जा सके।

eè;dkyhu Hkkjr esa efgykvksa dh lkekftd fLFkfr &

ikfjokfjd lajpuk vkj efgyk dh Hkwfedk &

मध्यकालीन भारत में परिवार की संरचना पितृसत्तात्मक थी। महिला की पहचान मुख्यतः उसके पति, पिता अथवा पुत्र के माध्यम से निर्धारित होती थी। विवाह के पश्चात स्त्री का समस्त अस्तित्व पति पर केंद्रित हो जाता था। मनुस्मृति का यह श्लोक कृ शपिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने, पुत्रस्तु स्थाविरे भावे न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हतिश कृ इस युग की सामाजिक मानसिकता का स्पष्ट प्रतिबिम्ब है। गृहस्थी का समस्त भार महिलाओं पर था। वे न केवल घर की देखभाल करती थीं बल्कि कृषि कार्यों में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान था। निम्न वर्ग की महिलाएं खेतों में काम करती थीं, कुम्हारी, बुनकरी एवं अन्य कुटीर उद्योगों में संलग्न रहती थीं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

ink çFkk vkj efgykvk dh Lor=rk ij çfrcèk &

इस्लामी शासन के आगमन के साथ पर्दा प्रथा का प्रचलन तेजी से बढ़ा। इस्लामी परंपरा में पर्दे की व्यवस्था थी और हिंदू समाज ने भी, विशेषतः उच्च जातियों में, इसे अपनाना आरंभ किया। राजपूत समाज में पर्दे की प्रथा श्लाजश के रूप में प्रचलित हुई। उत्तर भारत में यह प्रथा दक्षिण की अपेक्षा अधिक कठोर थी। इब्न बतूता (14वीं शती) ने दिल्ली सल्तनत में महिलाओं की स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा है कि उच्च वर्ग की महिलाएं पर्दे में रहती थीं। बर्नियर के यात्रा–वृत्तान्त (17वीं शती) में भी मुगल शाही हरम की चर्चा मिलती है जो यह दर्शाती है कि शाही परिवारों में भी महिलाओं की स्वतंत्रता अत्यंत सीमित थी।

f'k{kk dk vHkko &

मध्यकाल में उच्च जातियों की महिलाओं को कुछ घरेलू शिक्षा प्राप्त होती थी, परंतु विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा उनके लिए प्रायः वर्जित थी। मुस्लिम समाज में कुरान की शिक्षा को कुछ महिलाओं को दी जाती थी, परंतु यह भी सीमित वर्ग तक था। राजपरिवारों एवं अमीर घरानों की कुछ महिलाओं को अपवाद स्वरूप शिक्षा मिलती थी। इस युग में ऐसी विदुषी महिलाओं के उदाहरण भी मिलते हैं जिन्होंने परंपरा के विरुद्ध जाकर शिक्षा ग्रहण की। नूरजहाँ, गुलबदन बेगम (जिन्होंने हुमायूँनामा लिखा) तथा कुछ अन्य महिलाएं इस श्रेणी में आती हैं। किंतु ये अपवाद थे, नियम नहीं।

fookg ,oa L=h dk ntk &

मध्यकाल में बाल विवाह की प्रथा अत्यंत सामान्य थी। लड़कियों का विवाह अत्यंत कम आयु में कृ प्रायः 8 से 12 वर्ष के बीच कृ कर दिया जाता था। विधवा विवाह को हिंदू उच्च जातियों में निषिद्ध माना जाता था जबकि निम्न जातियों एवं मुस्लिम समुदाय में विधवा विवाह की स्वीकृति थी। बहुविवाह की प्रथा मुस्लिम समाज में प्रचलित थी, जबकि हिंदू समाज में राजा–महाराजाओं एवं उच्च वर्ग तक यह सीमित थी। सती प्रथा कृ जिसके अंतर्गत विधवा को पति की चिता पर जीवित जला दिया जाता था कृ इस काल की सर्वाधिक क्रूर सामाजिक कुरीतियों में एक थी। यह प्रथा विशेषतः राजपूत समाज में प्रचलित थी और इसे श्वीरांगनाश की पहचान के रूप में महिमामंडित किया जाता था।

eè;dkyhu Hkkjr esa efgykvk dh vkfFkd fLFkfr &

lifÙk vfèkdkj vkj fojklr &

मध्यकालीन भारत में हिंदू स्त्रियों के संपत्ति अधिकार अत्यंत सीमित थे। मिताक्षरा विधि के अनुसार स्त्री को पिता की संपत्ति में उत्तराधिकार का अधिकार नहीं था। श्स्त्रीधनश की अवधारणा में केवल वह संपत्ति सम्मिलित थी जो विवाह के अवसर पर उपहार स्वरूप प्राप्त हुई हो। दायभाग विधि (जो बंगाल में प्रचलित थी) में कुछ विशेष परिस्थितियों में पुत्री को उत्तराधिकार का अधिकार था, परंतु यह भी सीमित एवं शर्तों के अधीन था। मुस्लिम विधि (शरीयत) में महिला को उत्तराधिकार का अधिकार था, किंतु यह पुरुष की तुलना में आधा था। मुस्लिम स्त्री श्मेहरश की हकदार थी जो विवाह के समय पति द्वारा दी जाती थी।

0;kolkf;d ,o vkthfodk lcèkh fLFkfr &

निम्न एवं मध्यम वर्ग की महिलाएं आजीविका के लिए श्रम करती थीं। ग्रामीण क्षेत्रों में खेती, पशुपालन एवं कुटीर उद्योग उनकी आजीविका के मुख्य स्रोत थे। बुनकर, कुम्हार, माली एवं तेली जातियों की महिलाएं अपने पारंपरिक व्यवसायों में सक्रिय रहती थीं। नगरों में कुछ महिलाएं व्यापार, धाय का काम एवं अन्य सेवाओं में संलग्न थीं। दक्षिण भारत के मंदिरों में श्देवदासीश प्रथा प्रचलित थी जिसमें महिलाओं को मंदिर की सेवा में समर्पित किया जाता था। ये महिलाएं नृत्य एवं संगीत में निपुण होती थीं और मंदिर से जीविका प्राप्त करती थीं। तमिल नाडु के शिलालेखों में देवदासियों के भूमि स्वामित्व एवं आर्थिक स्वायत्तता के प्रमाण मिलते हैं।

0;kikj vkj okf.kT; e efgykvk dh Hkkxhnkjh &

कुछ महिला व्यापारियों के उल्लेख मध्यकालीन दस्तावेजों में मिलते हैं। विजयनगर साम्राज्य में महिला व्यापारियों एवं बाजारों का संचालन करने वाली महिलाओं के प्रमाण मिलते हैं। मुगल काल में नूरजहाँ ने व्यापारिक जहाजों में निवेश किया था। गुजरात एवं राजस्थान की व्यापारी जाति (बनिया) की महिलाएं भी कभी–कभी व्यापारिक निर्णयों में भाग लेती थीं।

eè;dkyhu Hkkjr e efgykvk dh lkL—frd fLFkfr &

Hkfä vkanksyu vkj efgyk larks dk mn; &

मध्यकाल का भक्ति आंदोलन महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण मुक्ति मार्ग बना। इस आंदोलन ने जाति एवं लिंग भेद को चुनौती देते हुए ईश्वर भक्ति को सर्वोच्च स्थान दिया। मीराबाई (1498–1546 ई.) राजस्थान की राजकुमारी से संत बनी और कृष्ण भक्ति में लीन होकर तत्कालीन पितृसत्तात्मक समाज की मान्यताओं को ललकारा। उनके पदों में स्त्री–स्वतंत्रता एवं आत्म–अभिव्यक्ति की अदम्य भावना परिलक्षित होती है। कर्नाटक में अक्कमहादेवी (12वीं शती) ने विवाह अस्वीकार कर शिव–भक्ति में जीवन समर्पित किया। आंध्र प्रदेश में तल्लापाका तिम्मक्का ने अनमोल तेलुगु साहित्य की रचना की। महाराष्ट्र में संत जनाबाई ने वारकरी परंपरा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन महिला संतों ने न केवल धर्म के क्षेत्र में बल्कि साहित्य एवं दर्शन के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दिया।

dyk] laxhr vkj uR; e efgykvk dk ;kxnku&

मध्यकाल में नृत्य एवं संगीत के क्षेत्र में महिलाओं की उपस्थिति उल्लेखनीय थी। दरबारी संस्कृति में गायिकाओं एवं नर्तकियों को संरक्षण प्राप्त था। मुगल दरबार में कई प्रतिभाशाली महिला कलाकारों का उल्लेख मिलता है। विजयनगर साम्राज्य (1336–1646 ई.) की शाही नर्तकियाँ उच्च कुशलता एवं सामाजिक सम्मान का आनंद लेती थीं। दक्षिण भारत में श्ओडिशीश, श्भरतनाट्यमश जैसे शास्त्रीय नृत्य परंपराओं का संरक्षण एवं विकास मंदिर की महिला कलाकारों के माध्यम से हुआ।

jktuhfrd thou e efgykvk dh mifLFkfr &

मध्यकाल में कुछ असाधारण महिलाओं ने राजनीतिक क्षेत्र में भी अपनी पहचान बनाई। रजिया सुल्तान (1236–1240 ई.) दिल्ली सल्तनत की एकमात्र महिला शासक थीं जो बिना पर्दे के दरबार में बैठती थीं और स्वयं सेना का नेतृत्व करती थीं। चाँद बीबी ने 1595 ई. में अहमदनगर की रक्षा करते हुए अकबर की सेना का सामना किया। मुगल काल में नूरजहाँ ने जहाँगीर के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 8, March 2026 Impact Factor: 8.2

शासनकाल में वास्तविक सत्ता का उपयोग किया। दक्षिण भारत में विजयनगर एवं चालुक्य काल में महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों के प्रमाण मिलते हैं।

lkfgR; e efgykvk dk ;xnku &

मध्यकाल में महिला लेखिकाओं की संख्या सीमित थी, परंतु जिन्होंने लिखा उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। गुलबदन बेगम ने श्हुमायूँनामाश की रचना की जो मुगल इतिहास का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। मीराबाई के पद, लल्लेश्वरी (कश्मीर) के श्वाखश, मुक्ताबाई, जनाबाई जैसी महिला संतों की रचनाएं मध्यकालीन भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं।

foopu ,oa fo'y"k.k &

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मध्यकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति अत्यंत जटिल एवं विरोधाभासी थी। एक ओर जहाँ सामाजिक कुरीतियाँ, पर्दा प्रथा, बाल विवाह एवं संपत्ति अधिकारों का अभाव उन्हें दोयम दर्जे पर रखता था, वहीं दूसरी ओर भक्ति आंदोलन, देवदासी परंपरा एवं कुछ राजनीतिक उदाहरण यह दर्शाते हैं कि महिलाओं ने सदैव अपनी अभिव्यक्ति का मार्ग खोजा क्षेत्रीय विभिन्नताएं भी इस काल में उल्लेखनीय हैं। दक्षिण भारत में, विशेषतः विजयनगर साम्राज्य में, महिलाओं की आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति उत्तर भारत की अपेक्षा अधिक स्वतंत्र थी। केरल में मातृसत्तात्मक परिवार संरचना (मरुमक्कतायम) में महिलाओं को संपत्ति एवं वंश के अधिकार प्राप्त थे। धार्मिक विभिन्नताएं भी महिला स्थिति को प्रभावित करती थीं। मुस्लिम स्त्री को कानूनी रूप से संपत्ति का अधिकार था, परंतु सामाजिक व्यवहार में यह प्रायः नाममात्र का रहा। जैन एवं बौद्ध समुदायों में महिलाओं को धार्मिक जीवन में प्रवेश की अनुमति थी जो हिंदू समाज के उच्च जातियों में प्रायः उपलब्ध नहीं थी।

fu"d"k &

मध्यकालीन भारत में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन करने के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यह काल महिलाओं के लिए अत्यंत चुनौतीपूर्ण था। सामाजिक स्तर पर पितृसत्तात्मक व्यवस्था, पर्दा प्रथा, बाल विवाह एवं सती प्रथा ने महिलाओं की स्वतंत्रता को गंभीर रूप से सीमित किया। आर्थिक स्तर पर संपत्ति अधिकारों का अभाव उन्हें पुरुषों पर निर्भर बनाता था। तथापि सांस्कृतिक क्षेत्र में भक्ति आंदोलन एवं कला की परंपराओं ने महिलाओं को आत्म–अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया। यह भी स्पष्ट है कि महिलाओं की स्थिति क्षेत्र, धर्म, जाति एवं वर्ग के आधार पर भिन्न–भिन्न थी। इसलिए मध्यकालीन भारतीय महिला को एकरूप वर्ग के रूप में देखना ऐतिहासिक सत्य के साथ न्याय नहीं होगा। इस काल में महिलाओं के प्रतिरोध एवं संघर्ष के जो उदाहरण मिलते हैं, वे आधुनिक नारी–मुक्ति आंदोलन की प्रेरणा के स्रोत हैं। अंत में यह कहा जा सकता है कि मध्यकालीन इतिहास लेखन में महिलाओं की भूमिका को समुचित स्थान दिए जाने की आवश्यकता है। तभी इस काल का सम्पूर्ण एवं संतुलित इतिहास–बोध संभव होगा।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 8, March 2026
Impact Factor: 8.2

संदर्भ सूची

[1]. **अल-बिरूनी** (**अनुवादक**: Edward Sachau, 1910). 'Alberuni's India', Kegan Paul, Trench, Trübner & Co., London.

[2]. **आयंगर**, **एस. कृष्णस्वामी** (1921). 'Some Contributions of South India to Indian Culture', Calcutta University Press, Calcutta.

[3]. **इब्न बतूता** (**अनुवादक**: H. A. R. Gibb, 1962). 'The Travels of Ibn Battuta', Cambridge University Press, Cambridge.

[4]. **कोसाम्बी**, **दामोदर धर्मानन्द** (1975). 'An Introduction to the Study of Indian History', Popular Prakashan, Bombay.

[5]. **चंद्रा**, **सतीश** (2007). 'History of Medieval India (800–1700)', Orient Blackswan, New Delhi.

[6]. **थापर**, **रोमिला** (2003). 'Early India: From the Origins to AD 1300', Allen Lane, London.

[7]. **दत्ता**, **स्वाति** (2008). 'Women in the Medieval Period in India', Indian History Congress Proceedings, Vol. 69, pp. 312–320.

[8]. **बर्नियर**, **फ्रांस्वा** (**अनुवादक**: Archibald Constable, 1891). 'Travels in the Mogul Empire AD 1656–1668', Westminster.

[9]. **भट्टाचार्य**, **नीलाद्रि** (2011). 'A Social History of India', Orient Blackswan, New Delhi.

[10]. **मिश्र**, **विजयलक्ष्मी** (2002). '**स्त्री विमर्श**: **परंपरा और आधुनिकता**', **राजकमल प्रकाशन**, **नई दिल्ली।**

[11]. **यादव**, **कृष्णकांत** (2015). '**मध्यकालीन भारत में महिला और समाज**', **हिंदी अनुसंधान पत्रिका**, **खंड** 12, **अंक** 3, **पृ**. 44–52।

[12]. **शर्मा**, **रामशरण** (1987). 'Urban Decay in India', Munshiram Manoharlal, New Delhi.

[13]. **सिंह**, **उपिंदर** (2008). 'A History of Ancient and Early Medieval India', Pearson Education, New Delhi.

[14]. Lal, Ruby (2005). 'Domesticity and Power in the Early Mughal World', Cambridge University Press, New York.

[15]. Pande, Rekha (2011). 'Divine Sounds from the Heart – Singing Unfettered in their own Voices: The Bhakti Movement and its Women Saints', Cambridge Scholars Publishing, UK.

[16]. Sharma, Dasharatha (1959). 'Early Chahamana Dynasties', S. Chand, Delhi.

[17]. Shulman, David (1980). 'Tamil Temple Myths: Sacrifice and Divine Marriage in the South Indian Saiva Tradition', Princeton University Press, Princeton.

[18]. Vanita, Ruth & Kidwai, Saleem (2000). 'Same Sex Love in India: Readings from Literature and History', St. Martin's Press, New York.